E-Content for student of Patliputra University Patna Bihar

Course-B Sc honours

Part-1

Subject- Hindi

Paper-composition(100 mark's)

Topic- कोरोनावायरस और लॉकडाउन के प्रभाव, विषय पर निबन्ध लिखें।

प्रस्तुतकर्ता-डॉ प्रफुल्ल कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग आरआरएस कॉलेज मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय पटना।

आज पूरे विश्व में कई लाख लोगों की मृत्यु कोरोनावायरस से हो चुकी है करोड़ों लोग इसकी चपेट में आकर जीवन और मृत्यु के जंग में संघर्ष कर रहे हैं। लॉकडाउन इस महामारी से निपटने के लिए जरूरी आवश्यक एवं एक मात्र उपाय है इसलिए विश्व के सभी देशों में आवश्यकता पड़ते ही लोकडाउन व्यवस्था का उपयोग किया है ।यह एक आपातकालीन व्यवस्था है, जो आपदा या महामारी के वक्त लागू की जाती है।जिस इलाके में लॉकडाउन किया जाता है, उस क्षेत्र के लोगों को घरों से बाहर निकलने की अनुमति नहीं होती है। उन्हें अपनी चिकित्सा और खाने-पीने जैसी अत्यन्त आवश्यक सामग्री के लिए ही बाहर आने की इजाजत मिलती है।लॉकडाउन के निर्धारित समय-सीमा में कोई भी व्यक्ति अनावश्यक सड़कों पर नहीं निकल सकता है।

इस महामारी की चपेट में करोड़ों लोग गरीबी भूखमरी तंगहाली से दम तोड़ेंगे।आने वाला कल एक विशेष प्रकार के परिवर्तन को लेकर सामने आएगा । समाज और परिवार में विशेष परिवर्तन दिखाई देगा। लोगों के रहन सहन और जीवनशैली में बदलाव मिलेगा। तत्काल यदि देखा जाए तो पारंपरिक जीवन शैली में बहुत अंतर पड़ा है। सामाजिक दूरी की व्यवस्था करने वाली सरकार की अनुमति के बिना लोग सामूहिक कार्यों में शामिल नहीं हो पा रहे हैं ।शादी-समारोहों, मंदिरों, मस्जिदों,जागरण में सामूहिक सभा का आयोजन नहीं कर सकते हैं। सभी

को एक दूसरे से दूरी बनाए रखने की हिदायत दी गई है। यातायात के सारे साधनों का उपयोग करने के नियम बनाए गए हैं।पारंपरिक हाटों, मेला बाजार आदि जगहों पर लोग इकट्ठा नहीं हो सकते हैं ।सामाजिक दूरी लोगों के भीतर अकेलेपन का एहसास करने के लिए मजबूर कर दिया है।इतनी बड़ी विडंबना है कि कोरोना मरीज की मौत होने पर उसके परिजन उसके मित्र संबंधी उसे पानी तक नहीं दे सकते हैं। उनके अंतिम संस्कार में भाग नहीं ले सकते हैं। यदि भाग लिया तो सितंबर 2020में धनबाद झारखण्ड के एक ही परिवार के मां का कंधा देने वाले पांच बेटों की तरह जान गंवानी पड़ सकती है। सभी दृष्टि से मनुष्य अकेला हो गया है। चीन के वूहान शहर से उत्पन्न होने वाला 2019 नोवेल कोरोनावायरस सार्स समूह के वायरसों का एक प्रकार है, जिसका संक्रमण सन् 2019-20 काल में तेज़ी से उभरकर 2019-20 वुहान कोरोना वायरस प्रकोप के रूप में पूरे विश्व में फैलता जा रहा है। हाल ही में WHO ने इसका नाम COVID-19 रखा। इसके नामकरण का आधार है-सूर्य ग्रहण के वक्त जब पृथ्वी सूर्य को पूरी तरह ढक देती है तो गोले के रूप में सूरज दिखना तो बंद हो जाता है लेकिन उसकी किरणों द्वारा हर तरफ फैल रही रोशनी दिखलाई पड़ती है, जो ब्रह्मांड में विलुप्त होती हुई दिखती है। यह सूरजमुखी के फूल की तरह की संचरना बन जाती है। बीच में काली और वृत्त के चारो तरफ किरणों का प्रकाश फैलता है, सूरजमुखी की पंखुड़ियों की तरह। सूर्य की इस रोशनी को करॉना कहा जाता है। ऐसी ही आकृति होने के कारण इस वायरस का नाम करॉना दिया गया है। इसकी बनावट करॉना जैसी ही है। यह वायरस गोल है और इसकी सतह पर पृथ्वी के करॉना की तरह प्रोटीन की स्टेन्स यानी शाखाएं उगी हुई हैं। जो हर दिशा में फैलती हुई महसूस होती हैं।कोरोनावायरस कई प्रकार के विषाणुओं (वायरस) का एक समूह है,जो स्तनधारियों और पक्षियों में रोग उत्पन्न करता है। यह आरएनए वायरस होते हैं। इनके कारण मानवों के श्वसनतंत्र में संक्रमण होता है जिससे हल्की सर्दी-जुकाम से लेकर,मृत्यु तक हो सकती है।इनकी रोकथाम के लिए कोई टीका (वैक्सीन)याविषाणुरोधी(antiviral) अभी उपलब्ध नहीं है, सैकड़ों टीके और दवाइयों पर प्रयोग किया जा रहा है। कुछ दवाओं(हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन)

और मेडिकल सुविधाएं कुछ रोगियों को बचाने में कामयाब हो गए हैं, फिर भी उपचार के लिए प्राणी अपनी प्रतिरक्षा प्रणाली पर निर्भर करता है। अभी तक रोग लक्षणों (जैसे कि निर्जलीकरण या डीहाइड्रेशन,ज्वर,आदि)का उपचार किया जाता है ताकि संक्रमण से लड़ते हुए शरीर की शक्ति बनी रहे। अब लगभग 15 प्रकार के नए लक्षण कोरोना के संदिग्ध माने जाएंगे. अब जी मिचलाना, उल्टी, दस्त, स्वाद और खुशबू की पहचान ना कर पाना, चलने में तकलीफ, त्वचा पर दाने, हाथ पैरों की उंगलियों का रंग बदलना, होठों में चेहरे का नीला पड़ जाना, जैसी स्थितियां भी अब कोरोना की लक्षणों में मानी जाएंगी. नई गाइडलाइन कोरोना वायरस! सार्स से भी 100 गुना ज्यादा संक्रामक कोरोना वायरस से अब तक कईलाख लोगों की मौत हो चुकी है।वर्तमान में सारी दुनिया कोरोना वायरस (Corona virus) संक्रमण से जूझ रही है. यूनिवर्सिटी ऑफ हांग कांग द्वारा कोरोना वायरस पर किए गए शोध में यह बात सामने आई है कि सार्स और बर्ड फ्लू की तुलना कोविड-19 (Covid-19) नाक और आंखों से 100 गुना ज्यादा तेजी से इंसान के शरीर में प्रवेश कर रहा है।इस शोध के अध्यक्ष डॉक्टर चान ने बताया कि अध्ययन में हमने मनुष्य के श्वसन प्रणाली और आंखों की कोशिकाओं की जांच की. जांच में पाया गया कि SARS-Cov-2 वायरस इंसान की आंख और ऊपरी सांसों के जरिए सार्स और बर्ड फ्लू से भी तेजी से लोगों को संक्रमित कर रहा है.

बचाव के लिए लोगों को आंखों को बार-बार न छूने की सलाह दी गई है. हाथों को थोड़ी-थोड़ी देर में साबुन और पानी से धोने की सलाह दी गई है।. एक शोध में यह बात सामने आई थी कि कोरोना वायरस स्टील, प्लास्टिक और जमीन पर 7 दिनों तक जिंदा रह सकता है।

अब तक दुनियाभर में लाखों लोगों की मौत हो चुकी है. संयुक्त राष्ट्र अमेरिका कोरोना वायरस का सबसे बड़ा गढ़ बन चुका है. वहीं, लाखों लोग इस वायरस से संक्रमित हो चुके हैं।चारो ओर महामारी है।चीन से फैले कोरोना वायरस ने धीरे-धीरे पूरे विश्व को अपनी चपेट में ले लिया है.चीन, इटली व ईरान में कोरोना से तबाही मची है व विश्व के तमाम देशों के साथ अमेरिका जैसा बेहतरीन चिकित्सकीय संसाधनों वाला देश भी अब

इसकी गिरफ्त में है। लोग दम तोड़ रहे हैं। इस वायरस से संक्रमित होने वालों की संख्या दिनोंदिन बढ़ती जा रही है और इसी रफ्तार से मौतों का भी आंकड़ा निरंतर बढ़ रहा है।भारत में कोरोनाग्रस्त लोगों की संख्या 11लाख से ज्यादा हो चुकी है। पूरे देश में लॉक डाउन होने के कारण लोगों के काम धंधे छूट गए हैं।कल-कारखाने बंद हैं।आवश्यक वस्तुओं के अलावा सारे प्रतिष्ठानों में बंदी है। काम के अभाव में मजदूर दूर-दूर से भूखे-प्यासे अपने घरों को लौट रहे हैं। दुनिया भर में मंदी की यह जबर्दस्त मार है जिससे उबरना आसान नहीं।विकास, आवागमन, कामकाज की सारी गति अवरुद्ध हैं। आधुनिक मानव इतिहास की सबसे बड़ी विभिषिकाओं में से एक इस 'कोरोना युग' पर जाने-माने आलोचक व कवि डॉ ओम निश्चल ने कई गीत, गजल लिखा है-

-किसका है यह पाप अधम / जीवन ज्यों हुआ अशुभकारी है / चारो ओर महामारी है।

देखो सब पैगंबर चुप है / एक वायरस घूम रहा है / फैल रहा है महासंक्रमण

जिसजिसको यह चूम रहा है / अभी पराजित नहीं समर में,/

युद्ध अभी इससे जारी है / चारो ओर महामारी है।

यह विश्व के विभिन्न देशों , महादेशों तक अपना जाल फैला ली है । इसलिए विश्व स्वास्थ्य संगठन ने इसे वैश्विक महामारी घोषित कर दिया है।प्राय: विषाणुओं अथवा जीवाणुओं से ऐसी बीमारियाँ फैलती हैं। इससे पूरे विश्व को विभिन्न क्षेत्रों में नुकसान उठाना पड़ता है । सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक , धार्मिक सभी दृष्टियों से महामारी काल में भिन्न भिन्न प्रकार की समस्याऐं उत्पन्न हो जाती हैं।वर्तमान में ऐसी ही महामारी की चपेट में पूरा विश्व आ गया है। न जाने कब इस बीमारी से निजात मिलेगी।

***